bdkbZ 38 ixMafM;ksa dk tekuk ¼gfj'kadj ijlkbZ½ okpu vkSj fo'ys"k.k

bdkbZ dh :ijs[kk

38.0 उद्देश्य
38.1 प्रस्तावना
38.2 निबंध का वाचन : पगडंडियों का ज़माना
38.3 निबंध का सार
38.4 संदर्भ सहित व्याख्या
38.5 निबंध की अंतर्वस्तु
38.6 लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति
38.7 संरचना-शिल्प
38.8 प्रतिपाद्य
38.9 सारांश
38.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

38-0 mís';

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के ऐच्छिक पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' के छठे खंड की छठी इकाई और पाठ्यक्रम की 38वीं इकाई है। इस इकाई में आप हरिशंकर परसाई द्वारा रचित व्यंग्य निबंध 'पगडंडियों का ज़माना' का वाचन और विश्लेषण का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- 'पगडंडियों का ज़माना' के वाचन से उसकी अंतर्वस्तु का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे;
- 'पगडंडियों का ज़माना' के प्रमुख अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे;
- 'पगडंडियों का ज़माना' की अंतर्वस्तु की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- 'पगडंडियों का ज़माना' में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- 'पगडंडियों का ज़माना' का व्यंग्य निबंध की विशेषताओं के संदर्भ में उसकी भाषा और शैली की विशेषताएँ बता सकेंगे; और
- 'पगडंडियों का ज़माना' के प्रतिपाद्य का विवेचन कर सकेंगे।

38-1 izLrkouk

हिंदी गद्य के इस पाठ्यक्रम के छठे खंड में आपने अब तक आपने हिंदी कथेतर गद्य के स्वरूप और विकास तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र के निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन', हजारी प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' और महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'घीसा' का अध्ययन किया है। इस इकाई में आप हिंदी के प्रख्यात व्यंग्य निबंधकार और कथाकार हरिशंकर परसाई की रचना 'पंगडंडियों का ज़माना' का अध्ययन करेंगे।

हरिशंकर परसाई स्वतंत्रता प्राप्ति के दौर के प्रमुख कथाकार और निबंधकार हैं। परसाई जी हिंदी के पहले ऐसे लेखक हैं जिन्होंने व्यंग्य को अपने लेखन का मुख्य माध्यम बनाया। कहानी, उपन्यास और निबंध तीनों विधाओं में जो भी लिखा वह व्यंग्य शैली में ही लिखा। इस तरह उन्होंने व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा का रूप दे दिया। परसाई जी का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में हुआ था। उन्होंने मुख्य रूप से व्यंग्य निबंध लिखे लेकिन कहानीकार के रूप में भी उनकी प्रतिष्ठा कम नहीं थी। उनकी व्यंग्य रचनाओं में 'भोलाराम का जीव', 'वैष्णव की फिसलन', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'पहला सफेद बाल' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने 'तट की खोज', 'रानी नागफनी की कहानी' और 'ज्वाला और जल' नामक उपन्यास भी लिखे। 'रानी नागफनी की कहानी' उपन्यास इंशाअल्ला खां की प्रख्यात रचना 'रानी केतकी की कहानी' शैली में लिखी गयी है। उनकी रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं और उनका लेखन काफी लोकप्रिय था। उन्होंने अपने

समय की कई महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं में व्यंग्य से संबंधित स्तंभ भी लिखे। वे प्रगतिशील विचार के लेखक थे। उन्हें अपने लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उनका निधन 10 अगस्त 1995 को हुआ।

इस इकाई में आप परसाई जी का व्यंग्य निबंध 'पंगडंडियों का ज़माना' का अध्ययन करेंगे। इस निबंध में परसाई जी ने शिक्षा के क्षेत्र में सिफारिशों से प्रवेश लेने, पेपर आउट कराने और परीक्षा में नंबर बढ़वाने की बढ़ती प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। हरिशंकर परसाई ने मेहनत, नैतिकता और ईमानदारी के आम रास्ते पर चलने की प्रवृत्ति के कमजोर पड़ने और सिफारिश, नकल और बेईमानी के शॉर्टकट के प्रति बढ़ते रुझान पर चिंता व्यक्त की है। परसाईजी ने इस व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक पतन की ओर अपने पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। यह एक छोटा व्यंग्य निबंध है, जिसमें लेखक ने विभिन्न प्रसंगों द्वारा अपनी बात कहने का प्रयत्न किया है। अब आप निबंध का वाचन कीजिए और उसे स्वयं समझने का प्रयत्न कीजिए। उसके बाद इकाई के अन्य भागों को पढ़कर इस व्यंग्य निबंध की विभिन्न विशेषताओं को जानने का प्रयास कीजिए।

38-2 fucU/k dk okpu % iXMfM;ksa dk tekuk

मैंने फिर ईमानदार बनने की कोशिश की और फिर नाकामयाब रहा।

एक सज्जन ने मुझसे कहा कि एक परिचित अध्यापक से कहकर मैं उनके लड़के के नम्बर बढ़वा दूँ। यों मैं उनका काम कर देता, पर बहुत अरसे बाद उसी दिन मुझे ईमान की याद आयी थी और मैंने पूरी तरह ईमानदार बन जाने की प्रतिज्ञा कर ली थी। सज्जन की बात सुनकर मुझे पुरानी कथाएँ याद आ गयीं और मैंने सोचा कि प्रतिज्ञा करते मुझे देर नहीं हुई कि ये इन्द्र या विष्णु मेरी परीक्षा लेने आ पहुँचे। उन्हें विश्वास नहीं है कि कोई इस ज़माने में लम्बी तपस्या करेगा। चार कहानियाँ लिखकर लोग युग-प्रवर्तक की लिस्ट में नाम खोजने लगते हैं। इसलिए ये देवता अब तपस्या शुरू होते ही परीक्षा लेने आ पहुँचते हैं।

मैंने उन्हें मन-ही-मन प्रणाम किया और प्रकट कहा, ''मैं इसे अनुचित और अनैतिक मानता हूँ। मैं यह काम नहीं करूँगा।''

मुझे आशा थी कि अब ये अपने मौलिक देव-रूप में प्रकट होंगे और कहेंगे- 'वत्स, तू परीक्षा में खरा उतरा। बोल, तुझे क्या चाहिए? हम वर देने के 'मूड' में हैं। बोल, हिन्दी साहित्य के इतिहास में तेरे ऊपर एक अध्याय लिखवा दूँ? या कहे तो, किसी समीक्षक की तेरे घर में पानी भरने की ड्यूटी लगा दूँ?'

वे मौलिक रूप में तो आये, पर वह प्रसन्नता का न होकर रोष का था। वे भुनभुनाकर चले गये। मैंने सुना, वे लोगों से मेरे बारे में कह रहे थे– 'आजकल वह साला बड़ा ईमानदार बन गया है।'

मैं जिसे देवता समझ बैठा था, वह तो आदमी निकला। मैंने अपनी आत्मा से पूछा, 'हे मेरी आत्मा, तू ही बता। क्या गाली खाकर बदनामी करवाकर मैं ईमानदार बना रहूँ?'

आत्मा ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसी कोई जरूरत नहीं है। इतनी जल्दी क्या पड़ी है? आगे ज़माना बदलेगा, तब बन जाना।'

मेरी आत्मा बड़ी सुलझी हुई बात कह देती है कभी-कभी। अच्छी आत्मा 'फोल्डिंग' कुर्सी की तरह होनी चाहिए। जरूरत पड़ी तब फैलाकर उस पर बैठ गये; नहीं तो मोड़कर कोने में टिका दिया। जब कभी आत्मा अड़ंगा लगाती है, तब मुझे समझ में आता है कि पुरानी कथाओं के दानव अपनी आत्मा को दूर किसी पहाड़ी पर तोते में क्यों रख देते थे। वे उससे मुक्त होकर बेखटके दानवी कर्म कर सकते थे। देव और दानव में अब भी तो यही फर्क है– एक की आत्मा अपने पास ही रहती है और दूसरे की उससे दूर।

मैंने ऐसे आदमी देखे हैं, जिनमें किसी ने अपनी आत्मा कुत्ते में रख दी है, किसी ने सूअर में। अब तो जानवरों ने भी यह विद्या सीख ली है और कुछ कुत्ते और सूअर अपनी आत्मा किसी-किसी आदमी में रख देते हैं।

आत्मा ने कह दिया, तो मैंने ईमानदार बनने का इरादा फिर त्याग दिया।

राधेश्याम ने भी कोशिश की थी और वह भी असफल हो गया। उसकी एक छोटी-सी दुकान है। उसने पैसे-पैसे की बिक्री का सही हिसाब रखा और उससे बिक्री करके दफ्तर ले गया।

वहां उससे कहा गया कि हिसाब झूठा हैं तब उसे सच्चे हिसाब को सच्चा मनवाने के लिए घूस देनी पड़ी। कह रहा था– मैं भी अब झूठा हिसाब रखूँगा। उसे घूस देकर सच्चा बनवा लिया करूँगा। सच्चाई के लिए घूस देने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि झूठ के लिए घूस दूँ। इतना महँगा ईमान अपनी हैसियत के बाहर है। इससे तो बेईमानी सस्ती पड़ेगी।

एक स्त्री नौकरी के सिलसिले में एक बड़े आदमी के पास सच्चरित्रता का प्रमाणपत्र लेने गयी थी। बड़े आदमी ने उसे पहले अपने शयन-कक्ष में ले जाना चाहा और बाद में सच्चरित्रता का प्रमाणपत्र देना चाहा। पहले देवता आदमी बनकर ठगते थे, अब आदमी देवता बनकर ठगते हैं।

देखता हूँ कि हर सत्य के हाथ में झूठ का प्रमाणपत्र है। ईमान के पास बेईमानी की सिफारिशी चिट्ठी न हो, तो कोई उसे दो कौड़ी को न पूछे। यही सब सोचकर मैं ढीला हो गया। अब मैं बड़े खुले मन से नम्बर बढ़वाता हूँ।

इन दिनों मुझे बहुत स्नेही मिलते हैं। जो कभी-कभी ही मिलते हैं, साल में एक-दो बार, उन्हें आते देखते ही समझ जाता हूँ कि वे किस काम से आये हैं। मैं मौसम देखकर ऐसे आनेवाले का काम बता सकता हूँ। जुलाई के पहले हफ्ते में, जब घटा छाई हो, धरा ने हरी चूनर ओढ़ रखी हो, आसपास मोर-पपीहा बोल रहे हों, बिजली नीग्रो सुन्दरी के दाँतों की तरह चमक रही हो, ऐसे सुहावने समय में कोई कई महीनों बाद आता दिखे, तो समझ जाता हूँ कि यह गीत गाने नहीं आया, बच्चों को स्कूल-कॉलेज में भर्ती कराने में मदद लेने आया है।

इधर मार्च में जो आता है, नम्बर बढ़वाने या 'पेपर आउट' करवाने आता हैं बात यह है कि सारे 'सिलेबस' और प्रास्पेक्ट्स' गलत हैं। उनमें उन दो पर्चों का उल्लेख नहीं होता, जो जरूरी होते हैं। एक पर्चा शुरू का और दूसरा आखिरी। पहला पर्चा 'पेपर आउट' करने का होता है। और आखिरी नम्बर बढ़वाने का। जो इन्हें अच्छी तरह कर ले, वह पास हो जाता है, पहला दर्जा भी पा सकता है। इन पर्चों को कुछ विद्यार्थी खुद कर लेते हैं। वे प्रतिभावान हैं और उनका भविष्य उज्ज्वल है। कुछ के अभिभावक यह पर्चे करते हैं। ऐसे परमुखापेक्षी विद्यार्थियों का भविष्य सन्दिग्ध है। उनकी अपेक्षा उनके अभिभावक का फिर भी कुछ भविष्य है।

अध्यापकों से संबंध होने के कारण मेरे पास दोनों पक्षों वाले काफी आते हैं। कल जो आये थे, वे मुझे बारात में दो साल पहले पहली और अन्तिम बार मिले थे। मुझे यह पता नहीं था कि उस छोटी मुलाकात में ही उन्होंने इतनी आत्मीयता पैदा कर ली थी कि भाई परीक्षा में बैठने लगा, तो उन्हें मेरी याद सताने लगी। सुना है, विरहिन को बरसात में प्रिय की बड़ी याद सताती है। परीक्षा के मौसम में भी कुछ लोगों का विरह जाग उठता है और उन्हें किन्हीं विशेष परिचितों की याद सताने लगती है वे कहने लगे– 'अमुक प्रोफेसर आपके मित्र हैं। उन्होंने एक पर्चा निकाला है। कुछ 'हिण्ट' दिला दीजिए न!' मैंने सोचा, किसी से मित्रता है, तो इसका कुल इतना उपयोग है कि जब जरूरत पड़े, उससे गलत काम करा लिया जाए। कोई यह तो कहता नहीं है कि अमुक से आपकी मित्रता है, तो उन्हें समझाइए न कि ऐसा गलत काम न करें। न कोई यह कहता है कि अमुक आपका दुश्मन है तो उससे पेपर आउट करवाकर उस साले का ईमान बिगाड़ दीजिए। नहीं, दुश्मन सब सुरक्षित हैं। ईमान तो हमेशा मित्र का बिगाड़ा जायेगा। किसी दिन कोई आकर मुझसे कहेगा– 'अमुक पुलिस अफसर से आपके अच्छे सम्बन्ध हैं। उनसे कहिए न कि घर में हमें सेंध लगा देने दें।'

इन सब पर्चा आउट करवानेवालों और नम्बर बढ़वानेवालों पर हँसा भी नहीं जा सकता। इनमें अधिकांश दया के पात्र हैं। ये बेहद परेशान और घबड़ाये हुए लोग हैं। कोई चाहता है कि लड़का पास हो जाये, तो उससे नौकरी करा दें, जिससे परिवार की दुर्दशा कुछ कम हो। किसी को चिन्ता है कि लड़का फेल हो गया, तो और एक साल उसकी पढ़ाई का खर्च कैसे चलाऊँगा। कोई चाहता है कि लड़की पास हो जाये, तो उसकी शादी करके बोझ हल्का करूँ। बहुत दुखी और परेशान लोग होते हैं, इनमें कुछ इतने दीन होते हैं कि जी होता है, पहले इनके गले लगकर रो लिया जाये!

मेरी परेशानी का कारण दूसरा है। ये अब बेझिझक, निस्संकोच और निर्लज्जता से काम करने लगे हैं। दस साल पहले भी मैं यह काम करा देता था। तब देखता था, नम्बर बढ़वानेवाला, बड़ी झिझक, लज्जा और संकोच से कहता था। लोग खुलकर नहीं कहते थे। तब ऐसी दबी-छिपी चिट्ठी आती थी–'अपने दोस्त, रमेशचन्द्र के भाई सुरेश की मोटर साइकिल, जिस पर

अंग्रेजी में नम्बर 2431 लिखा है, बिगड़ गयी है। वह आपके मित्र सिन्हा के पास सुधरने गयी है। आप उसे सुधरवा दें कि कम-से-कम 40 प्रतिशत तो काम देने लगे।' इसका मतलब है कि सुरेश का रोल नम्बर 2431 है। उसका अंग्रेजी का पर्चा बिगड़ा है। सिन्हा उसे जाँच रहे हैं और उनसे 40 प्रतिशत नम्बर दिलवाना है। अब सीधी चिट्ठी आ जाती है। खुला कार्ड तक आ जाता है। तब नम्बर बढ़वानेवाला बड़ी देर संकोच से बैठा रहता था, दुविधा में पड़ा रहता था, यहाँ-वहाँ की बातें करता था और तब कहीं शरमाकर बगलें झाँकता हुआ नम्बर बढ़वाने की बात कहता था। अब नम्बर बढ़वाने वाला इस तरह आता है, जैसे बाजार में सब्जी खरीदने जाता है। सीधा मेरी आँखों में देखता है और अधिकारपूर्वक कहता है कि नम्बर बढ़वाने हैं।

दस सालों में यह जो प्रगति हो गयी है, यह मुझे परेशान करती है। भयंकर संकोचहीनता है यह। यह साहस मुझे डराता है। मैं इन्तज़ार करता हूँ कि कोई तो थोड़ा संकोच लेकर आये, कि मैं कुछ आश्वस्त हो जाऊँ।

कोई नहीं आता। मुझे लगता है, हम सबने मान लिया है कि आम सड़कें सब बन्द हो गयी है। उन पर तख्ती टँग गयी है–'सड़क मरम्मत के लिए बन्द है।' सालों से ये सड़कें बन्द हैं और सब पगडण्डियों से जा रहे हैं। चलते-चलते पगडण्डियों के काँटे और झाड़ियाँ साफ हो गयी हैं और वे सड़कों जैसी चिकनी और चौड़ी हो गयी हैं। बेझिझक, नंगे पाँव इन पर लोग चल रहे हैं। आम सड़क पर चलनेवाला अब बेवकूफ या पागल समझा जायेगा। अब आम सड़कें खुल भी जायें, तो लोग उन पर चलने में झिझकेंगे। मरम्मतवाले भी इसीलिए ढीले पड़ गये हैं। मगर उपयोग न होने से आम सड़कों पर झाड़ियाँ और जंगली पौधे उगेंगे और वे ढक जायेंगी। तब किसी को आभास भी न होगा कि इस देश में कहीं आम सड़कें भी हैं।

लगता है, आम सड़कें अब भविष्य के पुरातत्ववेत्ता को ही मिलेंगी। वही इन्हें खोजेगा। वह निष्कर्ष निकालकर बतायेगा कि उस जमाने में इस देश में आम सड़कें तो थीं, पर कोई उन पर चलता नहीं था। सब पगडण्डी पकड़ते थे। अनुपयोग के कारण सड़कें दब गयी थीं।

सफलता के महल का सामने का आम दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुस गये हैं और उन्होंने कुण्डी लगा दी है। जिसे उसमें घुसना है, वह रूमाल नाक पर रखकर नाबदान में से घुस जाता है। आसपास सुगन्धित रूमालों की दुकानें लगी हैं। लोग रूमाल खरीदकर उसे नाक पर रखकर नाबदान में से घुस रहे हैं।

जिन्हें बदबू ज्यादा आती है और जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं, वे खड़े दरवाज़े पर सिर मार रहे हैं और उनके कपालों से खून बह रहा है।

38-3 fuc/k dk lkj

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंध 'पगडंडियों का ज़माना' का अध्ययन आपने कर लिया है। अब आप इस निबंध का सार अपने शब्दों में लिखने का प्रयत्न कीजिए। परसाई जी का यह निबंध आकार में बहुत छोटा है। निबंध में लेखक ने जो कहना चाहा है उसे छोटे-छोटे प्रसंगों के माध्यम से कहा है। निबंध की शुरुआत ही एक प्रसंग से होती है। इस प्रसंग के अनुसार एक व्यक्ति लेखक के पास पहुंचता है और चाहता है कि लेखक अपने परिचित अध्यापक से कहकर उसके बेटे के नंबर बढ़वा दे। लेकिन लेखक इन्कार कर देता है। लेखक उम्मीद करता है कि पौराणिक कथाओं की तरह उसकी ईमानदारी पर देवता प्रसन्न होंगे और उससे वरदान मांगने को कहेंगे लेकिन ऐसा नहीं होता। इसके उलट वह व्यक्ति लेखक से नाराज हो जाता है और शहर में उन्हें बदनाम करने लगता है। इससे लेखक अपनी आत्मा से पूछता है कि क्या इस बदनामी के बाद भी उसे ईमानदारी के मार्ग पर चलते रहना चाहिए या इस मार्ग को छोड़ देना चाहिए। लेखक राधेश्याम नाम के एक छोटे दुकानदार का उदाहरण देता है जो ईमानदारी से अपनी दुकान चलाता है और उसका सही-सही हिसाब रखता है लेकिन जब बिक्री कर के दफ्तर कर जमाने के लिए पहुंचता है तो वहां के अधिकारी यह कहते हुए उससे रिश्वत की मांग करते हैं कि उसका हिसाब-किताब सही नहीं है। दुकानदार इस अनुभव से इसी नतीजे पर पहुंचता है कि ईमानदारी के लिए घूस देने की बजाए बेईमानी के लिए घूस देना ज्यादा अच्छा है। लेखक ऐसे कई उदाहरण देता है जिससे साबित होता है कि वर्तमान समय में ईमानदारी की कोई कीमत नहीं है।

लेखक का कहना है कि परीक्षा से संबंधित लोग दो तरह के भ्रष्ट आचरण की ओर उन्मुख होते हैं। एक परीक्षा के शुरू में पेपर आउट कराने के लिए दूसरे परीक्षा के बाद नंबर बढ़वाने के लिए। इन कामों में विद्यार्थियों के अभिभावक सक्रिय होते हैं लेकिन कुछ विद्यार्थी भी इन अनैतिक कार्यों को करने में नहीं हिचकिचाते। लेखक ऐसे विद्यार्थियों के बारे में व्यंग्य में कहते हैं कि ये विद्यार्थी प्रतिभावान हैं और इनका भविष्य उज्ज्वल हैं।

परसाई जी ने शिक्षा में फैले भ्रष्ट आचरण के पीछे समाज के उस यथार्थ को भी उजागर किया है जो लोगों को अनैतिक आचरण की ओर धकेलती है। कोई चाहता है कि बच्चे को नौकरी लग जाए, कोई इस भय से कि अगर बच्चा फेल हो गया तो, पढ़ाई का खर्च एक साल और उठाना पड़ेगा और कोई अपनी लड़की के हाथ पीले करना चाहता है। लेकिन लेखक यह भी देख रहा है कि पहले अनैतिक कार्य करते हुए लोग लज्जा महसूस करते थे। वे हिचकिचाते और माफी सी मांगते हुए नंबर बढ़वाने के लिए कहते थे। लेकिन अब यह काम बेझिझक, निस्संकोच और निर्लज्जता से करते हैं। सफलता का जो मुख्य द्वार है बंद हो गया है और अंदर घुसने के लिए नाबदान का इस्तेमाल किया जा रहा है।

38-4 lanHkZ lfgr 0;k[;k

'पगडंडियों का ज़माना' एक छोटा सा व्यंग्य निबंध है लेकिन इसमें ऐसे बहुत से अंश है जिसकी विस्तृत व्याख्या की जा सकती है। लेखन ने जिस व्यंग्यात्मक शैली का इस्तेमाल किया है उसमें लेखक अपनी बात कहने के लिए कई तरह की प्रविधियों का इस्तेमाल कर सकता है। ऐसे अंश कथ्य, भाषिक प्रयोग और शैली की विशिष्टता की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। यहां कुछ ऐसे अंश व्याख्या के लिए प्रस्तुत हैः

1) *वत्स, तू परीक्षा में खरा उतरा। बोल, तुझे क्या चाहिए? हम वर देने के 'मूड' में हैं। बोल, हिंदी साहित्य के इतिहास में तेरे ऊपर एक अध्याय लिखवा दूँ? या कहे तो, किसी समीक्षक को तेरे घर में पानी भरने की ड्यूटी लगा दूँ?*

lanHkZ% इस व्यंग्य निबंध के लेखक प्रख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई है जिन्होंने व्यंग्य विधा को रचनात्मक उत्कर्षता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उक्त निबंध में उन्होंने समाज में व्याप्त एक कुप्रवृत्ति को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। परीक्षा में नबंर बढ़वाने और पेपर आउट कराने की प्रवृत्ति शिक्षा और समाज के लिए बहुत घातक है। इसी को उन्होंने इस निबंध में व्यंग्य के माध्यम से कहा है।

0;k[;k% इस निबधं के आरंभ में लेखक अपने को ऐसे भक्त के रूप में प्रस्तुत करता है जो भगवान द्वारा ली जाने वाली परीक्षा में खरा उतरा है और भगवान उससे प्रसन्न होकर वरदान प्रदान कर रहे हैं। आजकल के जमाने में नंबर बढ़वाने और पेपर आउट करवाने के लिए पड़ने वाले दबाव का सामना करना कठोर तपस्या के समान है। पौराणिक कथाओं में ईश्वर और देवताओं द्वारा भक्त की कठोर परीक्षा लेने के लिए भक्त की तपस्या को भंग करने का प्रयास किया जाता है। लेखक का विश्वास है कि जो ऐसे दबाव में नहीं आता भगवान उससे प्रसन्न होकर जरूर वरदान देंगे। परसाई जी एक लेखक हैं और एक लेखक की सबसे बड़ी इच्छा यही होती है कि उसका नाम साहित्य के इतिहास में अमर हो जाए और समीक्षक उसके लिखे की प्रशंसा करे। इसलिए वह ईश्वर से वरदान के रूप में भी इसी इच्छाओं की कल्पना करता है। साहित्य के इतिहास में लेखक के ऊपर एक अध्याय लिखा जाना और समीक्षक का लेखक के घर में पानी भरना इन्हीं इच्छाओं की अभिव्यक्ति है। पौराणिक कथा का पूरा प्रसंग व्यंग्यात्मकता पैदा करने के लिए है।

fo'k"k%

1) लेखक ने शिक्षा और साहित्य दोनों क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्ट आचरण पर व्यंग्य किया है।
2) इसके लिए लेखक ने पौराणिक प्रसंग का आधुनिक संदर्भ में प्रयोग किया है। इससे लेखक के कथ्य में व्यंग्यात्मकता आ गयी है। ऐसे प्रसंगों से पाठक परिचित होता है इसलिए वह आसानी से व्यंग्यात्मकता को समझ पाता है।
   हम यहां ऐसे दो अंश और प्रस्तुत कर रहे हैं जिनका व्याख्या आप स्वयं करने का प्रयास करें।

vH;kl

2) *अच्छी आत्मा 'फोल्डिंग' कुर्सी की तरह होनी चाहिए। जरूरत पड़ी तब फैलाकर उस पर बैठ गये; नही ंतो मोड़कर कोने में टिका दिया। जब कभी आत्मा अड़ंगा लगाती है, तब मुझे समझ में आता है कि पुरानी कथाओं के दानव अपनी आत्मा को दूर किसी पहाड़ी पर तोते में क्यों रख देते थे। वे उससे मुक्त होकर बेखटके दानवी कर्म कर सकते थे।*

3) *मुझे लगता है, हम सबने मान लिया है कि आम सड़कें सब बन्द हो गयी है। उन पर तख्ती टँग गयी है'–सड़क मरम्मत के लिए बन्द है।' सालों से ये सड़कें बन्द हैं और सब पगडण्डियों से जा रहे हैं। चलते-चलते पगडण्डियों के काँटे और झाड़ियाँ साफ हो गयी हैं और वे सड़कों जैसी चिकनी और चौड़ी हो गयी हैं। बेझिझक, नंगे पाँव इन पर लोग चल रहे हैं। आम सड़क पर चलनेवाला अब बेवकूफ या पागल समझा जायेगा।*

38-5 fucU/k dh vUroZLrq

हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित इस व्यंग्य निबंध का विषय है शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार। इसी विषय को व्यंग्य का निशाना बनाया है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान और कौशल प्राप्त करना। ज्ञान और कौशल के बहुत से क्षेत्र हो सकते हैं। बालक जब बोलने और समझने लगता है तो उसे पाठशाला में भर्ती कराकर माता-पिता उसे शिक्षा दिलवाते हैं। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है उसकी सीखने की क्षमता का विकास होता जाता है। उसने पूरे साल कितना सीखा है, इसे जांचने के लिए समय-समय पर परीक्षा ली जाती है और परीक्षा में आये अंकों के आधार पर उसे आगे की कक्षा में प्रवेश दिया जाता है। दसवीं और उसके बाद की परीक्षाओं का महत्त्व ज्यादा है क्योंकि उसमें प्राप्त अंकों के आधार पर ही विद्यार्थी को आगे की कक्षा में प्रवेश मिलता है। जिस क्षेत्र में वह पढ़ना चाहता है उस क्षेत्र में आवश्यक अंक हासिल करने पर ही उसे प्रवेश दिया जाता है। अंकों के आधार पर ही उसे नौकरी मिलती है। इसलिए अंकों का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्त्व है। विद्यार्थी को कितने अंक प्राप्त होंगे यह उसकी साल भर की मेहनत और सीखने की क्षमता पर निर्भर करता है। लेकिन बहुत से विद्यार्थी और विशेष रूप से उनके माता-पिता अधिक अंक हासिल करने के लिए जोड़-तोड़ का सहारा लेते हैं। उनकी कोशिश होती है कि परीक्षा का प्रश्नपत्र उन्हें पहले से मालूम हो ताकि उसीके अनुरूप और उतनी ही तैयारी करे। कुछ इस बात का प्रयत्न करते हैं कि परीक्षक तक पहुंच लगाकर परीक्षार्थी की वास्तविक योग्यता से ज्यादा अंक उन्हें मिल जाए। इसके लिए परीक्षक तक सिफारिश लगाने की कोशिश करते हैं। पेपर आउट कराने और नंबर बढ़वाने की इस प्रवृत्ति को ही हरिशंकर परसाई ने अपने इस व्यंग्य निबंध का विषय बनाया है।

'पगडंडियों का ज़माना' शीर्षक ही इस प्रवृत्ति का सूचक है। परीक्षा में पास होने और अच्छे नंबर लाने का कोई शॉर्टकट नहीं अपनाया जाना चाहिए। अध्ययन से ही विद्यार्थी को अच्छे नंबर प्राप्त करने चाहिए। अन्य कोई तरीका नहीं अपनाया जाना चाहिए। ऐसा कोई भी तरीका अनैतिक और अन्यायपूर्ण है। वह उन विद्यार्थियों के साथ अन्याय है जो अच्छे नंबरों के लिए सिर्फ अध्ययन पर निर्भर रहते हैं। इसके बावजूद हम देखते हैं कि बहुत से विद्यार्थी और अभिभावक परीक्षा में कामयाबी के लिए गलत रास्ते चुनते हैं। इन्हें ही लेखक ने पगडंडियां कहा है। लेखक ने सड़क और पगडंडी का रूपक अपनी बात कहने के लिए चुना है। परीक्षा में अध्ययन करके अच्छे नंबर लाना आम रास्ते की तरह है और पेपर आउट कराके या सिफारिश द्वारा नंबर बढ़वाना लेखक के अनुसार पगडंडियों का रास्ता है। लेखक का कहना है कि आजकल लोग आम रास्ते को छोड़कर पगडंडियों को अपना रहे हैं और इसीलिए वह आजकल के ज़माने को पगडंडियों का ज़माना कह रहा है।

इस व्यंग्य निबंध की शुरुआत लेखक एक पौराणिक प्रसंग से करते हैं। हिंदू पुराणों में ऐसे कई प्रसंग आते हैं जहां कोई व्यक्ति तपस्या करता है और उसकी कठोर तपस्या को भंग करने के लिए भगवान उसकी तरह तरह से तपस्या लेते हैं और जब वह तपस्या में उत्तीर्ण हो जाता है तो भगवान उसे वरदान देते हैं। यहां परसाई जी ऐसे ही पौराणिक मान्यता का उपयोग करते हैं। लेखक के पास बहुत से लोग नंबर बढ़वाने के लिए आते हैं। वे एक ऐसे ही प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि एक दिन वह ईमानदार रहने का संकल्प करते हैं और उसी दिन एक व्यक्ति उनके पास अपने बेटे के नंबर बढ़वाने के लिए लेखक के किसी अध्यापक मित्र से सिफारिश करने के लिए कहता है। लेखक सोचता है कि उसकी परीक्षा लेने के लिए स्वयं

इंद्र या विष्णु वेश बदलकर आये हैं। इसलिए वह उस व्यक्ति को यह कहते हुए कि *"मैं इसे अनुचित और अनैतिक मानता हूँ"* नंबर बढ़वाने से मना कर देता है। लेखक को उम्मीद होती है कि अब भगवान अपने असली रूप में प्रकट होंगे और प्रसन्न होकर उसे वरदान देंगे। लेकिन लेखक की उम्मीदों के विपरीत ऐसा कुछ नहीं होता। लड़के का पिता नाराज होकर चला जाता है और बाद में लेखक को यह कहते हुए बदनाम करता है कि *"आजकल वह साला बड़ा ईमानदार बन गया है"*। लेखक का नंबर बढ़ाने से इन्कार करना पूरी तरह सही था लेकिन बदले में उसे गालियां मिलती है। लेखक इस प्रसंग के माध्यम से कहना चाहता है कि आजकल ईमानदार व्यक्ति की लोग प्रशंसा नहीं करते वरन गालियां देते हैं। इन गालियों से विचलित होकर ज्यादातर लोग ईमानदारी का रास्ता त्याग देते हैं। एक अन्य प्रसंग का उदाहरण देते हुए बताता है कि एक ईमानदार दुकानदार अगर सही-सही हिसाब-किताब रखे तो भी उसकी ईमानदारी स्वीकार नहीं की जाती और ऐसे व्यक्ति से भी रिश्वत मांगी जाती है। तब व्यक्ति यही सोचता है कि जब ईमानदार रहकर भी रिश्वत देनी पड़ती है तो बेईमानी के रास्ते पर चलना ही क्या बेहतर नहीं है?

लेखक ने माना है कि नंबर बढ़वाने का प्रयास करने वाले सभी लोग आपराधिक मनोवृत्ति के नहीं होते। उनकी पारिवारिक और सामाजिक मजबूरियां भी काम कर रही होती है। मसलन, कोई चाहता है कि लड़का पास हो जाए तो उसकी नौकरी लग जाए। किसी को अपनी बेटी की शादी की फिक्र है तो किसी को फिक्र है कि लड़का फेल हो गया तो परिवार पर आर्थिक बोझ बढ़ जाएगा। ऐसे लोग नफ़रत के नहीं बल्कि दया के पात्र हैं। ये परेशान और डरे हुए लोग हैं।

लेखक सिफारिश के लिए आने वाले लोगों के बीच अंतर भी करता है। पहले लोग सिफारिश के लिए कहते हुए संकोच करते थे, बड़ी झिझक के साथ कहते थे। लुक-छिपकर। कहीं इस बात की भनक किसी अन्य को न लग जाए कि शर्मिंदा होना पड़े। लेकिन आजकल लोग *"बेझिझक, निस्संकोच और निर्लज्जता"* के साथ सिफारिश करने के लिए कहते हैं। यह अधोपतन की पराकाष्ठा है। लेखक का कहना है कि लोगों ने मान लिया है कि आम रास्ते पर चलने में बुद्धिमानी नहीं है। पगडंडियों पर चलने में ही समझदारी है। पगडंडी यानी नंबर बढ़वाने और पेपर आउट करवाने का शार्टकट ताकि परीक्षा में अच्छे नंबर बिना मेहनत किये हासिल हो सके। मेहनत का रास्ता लोगों को कठिन लगता है। आजकल पगडंडियों पर चलने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और इसीलिए लेखक आजकल के ज़माने को पगडंडियों का ज़माना कहता है। शीर्षक इसी अर्थ में सार्थक है।

ck/k i'u

1. इस व्यंग्य निबंध में लेखक ने किस तरह के भ्रष्टाचार को व्यंग्य का विषय बनाया है?
   क) आर्थिक भ्रष्टाचार को
   ख) रिश्वतखोरी को
   ग) शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार को
   घ) निबंध का विषय भ्रष्टाचार नहीं है ( )
2. निबंध में पगडंडी का क्या निहितार्थ है?
   क) छोटा रास्ता
   ख) मुख्य रास्ता
   ग) कच्चा रास्ता
   घ) सफलता का शार्टकट ( )
3. लोग सफलता के लिए मुख्य द्वार का इस्तेमाल क्यों नहीं करते?

   .....

   .....

   .....

38-6 y[kdh; 0;fDrRo dh vfHk0;fDr

हरिशंकर परसाई प्रख्यात व्यंग्यकार हैं। इन्होंने इस विधा में ही कहानी, निबंध, उपन्यास आदि की रचना की है। 'पगडंडियों का ज़माना' एक व्यंग्य निबंध है और इसमें उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। परसाई जी की पहचान उनकी व्यंग्य शैली है। वह

जिस किसी भी विषय को उठाते हैं, उसमें व्यंग्य के लिए अवसर निकाल लेते हैं। इस निबंध में भी उन्होंने आरंभ से अंत तक व्यंग्य के माध्यम से अपनी बात कही है। व्यंग्यात्मकता के साथ विनोदप्रियता उनका दूसरा गुण है जिसे भी आप निबंध में कदम-कदम पर देख सकते हैं। मसलन, निबंध के आरंभ में ही पौराणिक प्रसंग का उपयोग करते हुए जब वे वरदान मांगने का उल्लेख करते हैं, तो वहां एक लेखक की आकांक्षा को व्यक्त करने में विनोदप्रियता का सहारा लिया है। उन्होंने देवता के मुख से जो बातें कहलाई हैं वहां लेखकों की मनोगत इच्छाओं को विनोद भाव से पेश किया है। वे देवता के मुख से कहलाते हैं, *"वत्स, तू परीक्षा में खरा उतरा। बोल, तुझे क्या चाहिए? हम वर देने के 'मूड' में हैं। बोल, हिन्दी साहित्य के इतिहास में तेरे ऊपर एक अध्याय लिखवा दूँ? या कहे तो, किसी समीक्षक की तेरे घर में पानी भरने की ड्यूटी लगा दूँ?"* देवता द्वारा वरदान देने की इस भाषा में पौराणिक शैली की पैरोडी बनाई गई है और यहां लेखक ने व्यंग्य के साथ विनोदप्रियता को भी अभिव्यक्त किया है। "हम वर देने के 'मूड' में हैं" इसका उदाहरण है। इसी तरह हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अध्याय लिखवाना या समीक्षक को पानी भरने की ड्यूटी पर लगाने की बात करने के पीछे भी विनोद-प्रियता को देखा जा सकता है। व्यंग्य के साथ विनोद का संयोग होने से रचना पठनीय बन गयी है।

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य निरुद्‌देश्य नहीं होता। उसके पीछे उनकी जीवन दृष्टि काम कर रही होती है। लेखक शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार के बहाने उस प्रवृत्ति को अपने व्यंग्य का निशाना बनाता है जो अनैतिक और अन्यायपूर्ण आचरण को सामाजिक स्वीकृति दिलाती है। शिक्षा में कामयाबी प्राप्त करने का एक ही तरीका है कि विद्यार्थी अधिक से अधिक मेहनत करे और मेहनत से प्राप्त अंकों से संतुष्ट हो। अगर विद्यार्थी पूरे साल मेहनत करेगा तो उसे या उसके अभिभावकों को कोई अनुचित तरीका अपनाने की जरूरत नहीं होगी। लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं देखते। विद्यार्थियों से ज्यादा उनके माता-पिता अपने बच्चों को कामयाब बनाने के लिए गलत तरीके अपनाते हैं। इसके पीछे उनकी मजबूरी भी हो सकती है लेकिन यह है अनुचित ही। परसाई जी प्रगतिशील विचारों में यकीन रखते थे और प्रत्येक सामाजिक समस्या को समाज के व्यापक हितों की दृष्टि से परखते थे। इस व्यंग्य निबंध में उन्होंने शिक्षा के माध्यम से अपनी बात कही है लेकिन यह सिर्फ शिक्षा तक सीमित नहीं है। सामाजिक जीवन के प्रत्येक हिस्से में इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है। लोग अपने छोटे-छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिए गलत तरीकों से समझौता करते हैं। आम रास्ते को छोड़कर पगडंडियों पर चलने की बढ़ती प्रवृत्ति परसाई जी के लिए चिंता का विषय है।

लेखक इस बात से भी चिंतित है कि लोगों में अनैतिक आचरण को लेकर जो शर्मींदगी का भाव दिखाई देता था, अब वह शर्मींदगी का भाव लोगों में कम हो गया है और अब लोग निस्संकोच और निर्लज्ज होकर सिफारिश के लिए कहते हैं। यदि कोई ऐसा काम करने से इन्कार कर देता है तो उसे अपमानित करने से भी लोग नहीं झिझकते।

ck/k i'u

4. हरिशंकर परसाई की जीवन दृष्टि की विशेषता है:
   - क) प्रगतिशीलता
   - ख) सामाजिक दायित्वबोध
   - ग) ईमानदारी
   - घ) उपर्युक्त सभी ( )
5. परसाई जी के लेखकीय व्यक्तित्व की केंद्रीय विशेषता है:
   - क) व्यंग्यात्मकता
   - ख) काव्यात्मकता
   - ग) हास्य
   - घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ( )
6. परसाई जी को व्यंग्यकार क्यों माना जाता है?

   ....

   ....

   ....

   ....

38-7 lajpuk-f'kYi

परसाई जी की यह रचना व्यंग्य निबंध है। इसमें निबंध की विशेषताएं भी हैं और व्यंग्य की भी। व्यंग्य केवल शैली तक सीमित नहीं है बल्कि निबंध के प्रत्येक पक्ष में इसे देखा जा सकता है। निबंध के कथ्य, भाषा और शैली तीनों में व्यंग्य है। शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार पर परसाई जी वैचारिक निबंध भी लिख सकते थे लेकिन इस पर उन्होंने व्यंग्य निबंध लिखा।

dF; e a0;X;

व्यंग्य निबंध होने के कारण परसाई जी ने इससे जुड़े सभी पक्षों को अभिधात्मक रूप में न प्रस्तुत कर उसे व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया। मसलन, निबंध की शुरुआत में ही उनका यह कहना कि मैंने आज ही ईमानदार बन जाने की प्रतिज्ञा की है और उसके बाद किसी व्यक्ति का उनके पास सिफारिश के लिए पहुंचना एक ऐसी स्थिति को पैदा करता है जैसे देवताओं ने ईमानदार बने रहने वाले व्यक्ति की परीक्षा लेने के लिए उसकी तपस्या को भंग करने की कोशिश कर रहे हों। लेखक का सिफारिश से मना करना और उस व्यक्ति का भुनभुनाते हुए जाना और बाद में लेखक को बदनाम करना स्थितियों में निहित विडंबना को ध्वनित करता है। इस पूरे प्रसंग को पौराणिक प्रसंग का रूप देना रचना को रोचक भी बना देता है और अर्थवान भी। इस घटना के बाद लेखक का अपनी आत्मा से संक्षिप्त संवाद भी मानीखेज है। ईमानदारी की राह पर चलकर अपमानित होने के बाद लेखक अपनी आत्मा से पूछता है कि *"क्या गाली खाकर बदनामी करवाकर मैं ईमानदार बना रहूँ?"* आत्मा उत्तर देती है कि ऐसी कोई जरूरत नहीं है। स्पष्ट ही यहां लेखक ने पुराण कथाओं और आत्मा की अवधारणा पर भी व्यंग्य किया है। अगर आत्मा मनुष्य को अच्छे रास्ते पर ले जाती है तो फिर लोग बुराई का रास्ता क्यों पकड़ते हैं। इसीलिए आगे वह फोल्डिंग कुर्सी का रूपक प्रस्तुत करते हुए लोगों के अवसरवाद पर व्यंग्य किया है। वे लिखते हैं, *"अच्छी आत्मा 'फोल्डिंग' कुर्सी की तरह होनी चाहिए। जरूरत पड़ी तब फैलाकर उस पर बैठ गये; नही तो मोड़कर कोने में टिका दिया।"* लोग ऐसा ही करते हैं। जब जरूरत होती है आत्मा की दुहाई देने लगते हैं और जब स्वार्थ का प्रश्न आता है तो लोग आत्मा को भूल जाते हैं। परसाई जी अपनी बात को सशक्त रूप में कहने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों से उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। ईमानदार दुकानदार, नौकरी की इच्छा रखने वाली युवा स्त्री भी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का शिकार होती हैं। परसाई जी निबंध में व्यंग्य का कोई भी अवसर नहीं छोड़ते। नंबर बढ़वाने और पेपर आउट कराने के लिए विद्यार्थियों के अभिभावक ही अध्यापकों से संपर्क करते हैं लेकिन कुछ विद्यार्थी भी इसके लिए इधर-उधर भटकते हैं। यहां व्यंग्य करते हुए परसाई जी लिखते हैं कि जो विद्यार्थी इस तरह के कामों के लिए स्वयं प्रयत्न करते हैं वे प्रतिभावान हैं और उनका भविष्य उज्ज्वल हैं, उन विद्यार्थियों की तुलना में जिनके अभिभावक इसके लिए प्रयत्न करते हैं। अपने अभिभावकों पर निर्भर रहने वाले विद्यार्थियों का भविष्य लेखक के अनुसार संदिग्ध ा है। हां उनके अभिभावकों का भविष्य अवश्य उज्ज्वल है। इस व्यंग्य का निहितार्थ यह है कि आजकल चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। गलत तरीके अपनाकर ही लोग आगे बढ़ते हैं। वे विद्यार्थी जो ऐसे कामों के लिए भी अपने माता-पिता पर निर्भर हैं वे आगे कुछ कर पाएंगे इसकी संभावना बहुत कम है। इस तरह पूरे निबंध में कथ्य को वे व्यंग्य के माध्यम से ही आगे बढ़ाते जाते हैं।

'kyh e a0;X;

यह निबंध व्यंग्यात्मक शैली में है। व्यंग्य के लिए परसाई जी ने निबंध को शुद्ध निबंध की तरह प्रस्तुत करने की बजाए उसे विभिन्न प्रसंगों और घटनाओं का सहारा लेते हुए प्रस्तुत किया है। इससे उनके निबंध में किस्सागोई की विशेषता का भी समावेश हो गया है। इससे उनके व्यंग्य को ठोस आधार मिल गया है। इसके अलावा वे रूपकों और प्रतीकों का भी सहारा लेते हैं। पुराण कथा के माध्यम से अपनी बात कहना भी उनके व्यंग्य लेखन की एक शैलीगत विशेषता है। पगडंडी और मुख्य मार्ग रूपक भी हैं और प्रतीक भी। इसी तरह फोल्डिंग कुर्सी के प्रतीक को भी वे रूपक की तरह इस्तेमाल करते हैं। परसाई जी की व्यंग्य शैली की विशेषता यह भी है कि वे विरोधी स्थितियों का कंट्रास पैदा करते हैं और कई बार ऐसा करते हुए वे व्यंग्य में निहित विडंबना को भी उजागर करते हैं। लेखक की व्यंग्य शैली संवाद की तरह है। वे पाठकों से बातचीत करते प्रतीत होते हैं। इससे पाठक और लेखक के बीच की दूरी कम

हो जाती है और पाठक लेखक के बीच आत्मीय रिश्ता बन जाता है। पाठ को लेखक की बात चुभती नहीं और वह व्यंग्य के माध्यम से पाठक से जुड़ भी जाता है।

Hkk"kk e: 0;X;

परसाई जी की भाषा में व्यंग्य शब्दों के चयन, पद रचना और वाक्य रचना तीनों में प्रकट होता है। आरंभ में ही जब वे देवता की ओर से वरदान की कल्पना करते हैं तो वहां प्रयुक्त वाक्य रचना ही व्यंग्यपूर्ण है। *"वत्स! तू परीक्षा में खरा उतरा। बोल, तुझे क्या चाहिए? हम वर देने के 'मूड' में है।"* यहां संबोधन के लिए वत्स शब्द व्यंग्यात्मक है। इसी तरह वर देने के मूड में है, में अंग्रेजी शब्द मूड का प्रयोग भी व्यंग्यात्मक है और वत्स से कंट्रास भी पैदा करता है। इसी तरह बोल हिंदी साहित्य के इतिहास में तेरे ऊपर एक अध्याय लिखवा दूँ या समीक्षक को घर में पानी भरने की ड्यूटी पर लगवाने में भी व्यंग्यात्मकता है। यहां पुराण कथाओं पर भी व्यंग्य है और साहित्य समीक्षा और इतिहास लेखन की वर्तमान दशा पर भी व्यंग्य है। आत्मा को 'फोल्डिंग कुर्सी' कहना या मनुष्य की आत्मा का कुत्ते या सूअर में होने में भी व्यंग्य है। लेकिन जब परसाई जी यह कहते हैं कि कुछ कुत्ते और सूअर ने अपनी आत्मा आदमी में रख दी है तो यहां व्यंग्य में तीखा प्रहार भी दिखाई देता है।

निबंध में ईमानदार दुकानदार को जब अपनी ईमानदारी के लिए भी घूस देनी पड़ती है तो उसके द्वारा यह कहलाने में भी तीखा व्यंग्य है कि *"सच्चाई के लिए घूस देने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि झूठ के लिए घूस दूँ"।*

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में गहरी अर्थवत्ता भी छिपी होती है। ऊपर जिस वाक्य को उद्धृत किया गया है वहां स्थितियों की विडंबना साफ झलकती है। जब वे स्थितियों का विश्लेषण करते हुए लिखते हैं कि *"कृहर सत्य के हाथ में झूठ का प्रमाणपत्र है"* या *"ईमान के पास बेईमानी की सिफारिशी चिट्ठी न हो, तो कोई उसे दो कौड़ी का न पूछे"* तो स्थितियों में निहित विडंबना तो व्यक्त होती ही है, साथ ही सूत्र रूप में बात को गहन अर्थवता प्रदान करने की उनकी भाषिक क्षमता का ज्ञान भी होता है। यह अर्थवत्ता अपने चरम रूप में निबंध के अंतिम परिच्छेद में दिखायी देती है जब वे मौजूदा हालात में ईमानदारी पर चलने वाले लोगों की त्रासद स्थिति को उजागर करते हैं। जिन लोगों को बेईमानी के रास्ते पर चलना अब भी गवारा नहीं है उनकी स्थिति उस व्यक्ति की तरह है जो मुख्य द्वार से जाने के अपने प्रयत्न में अपना सिर तो फुड़वा लेता है लेकिन अंदर प्रवेश नहीं कर पाता। वे लिखते हैं, *"जिन्हें बदबू ज्यादा आती है और जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं वे खड़े दरवाजे पर सिर मार रहे हैं और उनके कपालों से खून बह रहा है"*।

38-8 ifr ik|

'पगडंडियों का ज़माना' एक व्यंग्य निबंध है और इस निबंध के माध्यम से हरिशंकर परसाई ने शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। यह निबंध मुख्यतः स्कूली शिक्षा से संबंधित है और दो तरह के भ्रष्टाचार का उल्लेख इसमें किया गया है। नंबर बढ़वाना और पेपर आउट करवाना। इन दोनों का संबंध परीक्षा प्रणाली से है। इसके लिए किस तरह विद्यार्थियों के अभिभावक अध्यापकों से संपर्क करते हैं या ऐसे किसी परिचित व्यक्ति से संपर्क करते हैं जिनके माध्यम से उस शिक्षक तक सिफारिश पहुंचायी जा सकती है जिसने पेपर बनाया है या जिसे कापियां जांचनी है। नंबर बढ़वाने की कोशिश करना या परीक्षा से पहले पेपर के बारे में जानकारी हासिल करना अपराध भी है और अनैतिक भी है। लेकिन हम जानते हैं कि लोग इस काम को निस्संकोच होकर बेशर्मी से करते हैं। यह प्रवृत्ति सिर्फ स्कूली शिक्षा तक सीमित नहीं है बल्कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी इसे देखा जा सकता है। इससे उन विद्यार्थियों का मनोबल गिरता है जो साल भर मेहनत करते हैं और अपनी मेहनत के बल पर परीक्षा में अच्छे अंक हासिल करने की उम्मीद लगाते हैं। लेकिन जब उनके बराबर या उनसे ज्यादा अंक वे विद्यार्थी हासिल कर लेते हैं जिन्होंने न तो उतनी मेहनत की है और न ही जिनमें उतनी प्रतिभा है, तो उनको आघात लगता है। यही नहीं उन्हें नुकसान भी उठाना पड़ सकता है और इस बात की संभावना भी रहती है कि ये विद्यार्थी भी भविष्य में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए ऐसे ही अनैतिक तरीके अपनाएं।

शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्ट आचरण जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है। एक ईमानदार दूकानदार को यदि रिश्वत देनी पड़े या एक स्त्री को नौकरी हासिल करने के लिए अपने चरित्र का सौदा करना पड़े तो यह बहुत ही शर्मनाक बात है। परसाई जी ने अपने इस निबंध में समाज में इसी पतनशीलता को व्यंग्य का निशाना बनाया है। मुख्य रूप से शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार पर उन्होंने व्यंग्य किया है लेकिन इसके साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों का भी उल्लेख उन्होंने किया है। परसाई जी ने इस निबंध के माध्यम से कहा है कि लोग कामयाब होने के लिए मेहनत का सहारा लेने की बजाए ऐसे शॉर्टकट ढूंढते हैं जो भले ही अनैतिक और अपराधपूर्ण हो लेकिन जिनमें कामयाबी सुनिश्चित होती है। लेकिन ऐसा करते हुए वह अपने देश और समाज को कितना नुकसान पहुंचाते हैं इस बार में नहीं सोचते। वे सिर्फ अपने बारे में और अपने बच्चों के बारे में सोचते हैं। यह ठीक है कि प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ मजबूरियां होती हैं लेकिन मजबूरियों का अर्थ यह नहीं है कि ऐसे मार्ग अपनाए जाएं जो अपराध भी है और अनैतिक भी है।

हरिशंकर परसाई जी इस व्यंग्य निबंध में यह भी बताना चाहते हैं कि नंबर बढ़वाने और पेपर आउट कराने जैसी प्रवृत्तियां बहुत आम हो गयी है। कह सकते हैं कि इन्हें समाज की स्वीकृति मिल चुकी है। लोग इसे ही स्वाभाविक मानने लगे हैं। यही कारण है कि ऐसे काम करते हुए लोगों को न तो संकोच होता है और न ही शर्मींदगी महसूस होती है। इसके विपरीत जो इन कामों में शामिल नहीं है और इनका विरोध करते हैं लोग उनका मजाक उड़ाते हैं, उनका अपमान करते हैं। निबंध के अंत में ऐसे लोगों के कपाल से खून बहते हुए दिखाने का तात्पर्य यही है।

ck/k i'u

7. आत्मा को फोल्डिंग कुर्सी क्यों कहा गया है?

.....

.....

.....

8. *'अपने दोस्त रमेशचंद के भाई सुरेश की मोटर साइकिल, जिस पर अंग्रेजी में 2431 लिखा है, बिगड़ गयी है। वह आपके मित्र सिन्हा के पास सुधरने गयी है। आप उसे सुधरवा दें कि कम से कम 40 प्रतिशत तो काम देने लगे'।*
इन पंक्तियों में क्या संदेश संप्रेषित किया गया है?

.....

.....

.....

9. इस निबंध में मुख्य मार्ग किसे कहा गया है?

.....

.....

.....

.....

10. 'इन दिनों मुझे बहुत स्नेही मिलते हैं' इस कथन में 'स्नेही' में क्या व्यंग्यार्थ छिपा है, इसे स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

vH;kl

3. 'पगडंडियों का ज़माना' निबंध में शिक्षा की किस समस्या का उल्लेख किया गया है? इस समस्या का महत्त्व क्या है?

.....

.....

.....

4. इस निबंध की भाषा और शैली की विशेषताओं का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. निबंध के शीर्षक 'पगडंडियों का ज़माना' का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

38-9 lkjk'k

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' (बीएचडीई-101) की 38 वीं इकाई और छठे खंड की यह छठी इकाई है। इस इकाई में आपने प्रख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंध 'पगडंडियों का ज़माना' का अध्ययन किया है। साथ ही, आपने इस निबंध की अंतर्वस्तु, लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव, भाषा और शैली की विशेषताएं और प्रतिपाद्य का भी अध्ययन किया है। निबंध के कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या के बारे में भी आपने इस इकाई में अध्ययन किया है। आपसे उम्मीद की जाती है कि आप परसाई जी के इस निबंध और इस इकाई का ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे।

- परसाई जी का यह निबंध शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के बारे में है। परसाई जी ने वास्तविक जीवन के कुछ उदाहरणों के द्वारा इस भ्रष्टाचार के बारे में लिखा है। परसाई जी ने भ्रष्ट आचारण की इस व्यापक प्रवृत्ति पर गहरी चिंता जताई है। उनका मानना है कि नंबर बढ़वाने और पेपर आउट करवाने जैसी प्रवृत्तियां इसलिए बढ़ती है क्योंकि लोग मेहनत का श्रमसाध्य रास्ता छोड़कर ऐसा शॉर्टकट ढूंढना चाहते हैं जिससे जल्दी कामयाबी मिल सके भले ही वह रास्ता गलत हो। परसाई जी ने इसे ही व्यंग्य का निशाना बनाया है।

- परसाई जी की लेखनी पर उनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। वे प्रगतिशील दृष्टिकोण के लेखक हैं और उनकी लेखनी में भी उनका दृष्टिकाण अभिव्यक्त होता है। परसाई जी ने व्यंग्य को एक शैली की तरह नहीं वरन विधा की तरह अपनाया है। उन्होंने चाहे जिस विधा में लिखा हो, लेकिन व्यंग्य उनके लेखन के केंद्र में रहता है। इसके लिए जीवन के रोजमर्रा के प्रसंग लेते हैं और उन्हीं से व्यंग्य की सृष्टि करते हैं।

- परसाई जी के इस व्यंग्य निबंध में अंतर्वस्तु, भाषा और शैली तीनों में व्यंग्य को देखा जा सकता है। परसाई जी निबंध की अंतर्वस्तु को इस तरह प्रस्तुत करते हैं जिससे व्यंग्य की अभिव्यक्ति हो, इसी तरह उनके निबंध की शैली में भी व्यंग्यात्मकता निहित होती है और भाषा के स्तर पर वह वाक्य, पद और शब्द में भी व्यंग्य पैदा करने की कोशिश करते हैं।

- परसाई जी के इस निबंध का उद्देश्य शिक्षा और सामाजिक जीवन के दूसरे क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्ट आचरण की प्रवृत्तियों को उजागर कर उनके प्रति लोगों को जागरूक करना है। वह इसके लिए व्यंग्य का सहारा लेते हैं और इस तरह अपने उद्देश्य को बोझिल नहीं होने देते। उनके निबंध आज भी प्रासंगिक हैं।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप परसाई जी के निबंध को अच्छी तरह से समझ सकेंगे और उनकी विशेषताओं से भी परिचित हो सकेंगे।

38-10 ck/k i:'uk@vH;kl dk mÙkj

Ckk/k i:'u

1. ग) 2. घ)
3. लोग सफलता के लिए मुख्य द्वार का प्रयोग इसलिए नहीं करते क्योंकि उसके लिए निरंतर श्रम करना पड़ता है और ईमानदारी के रास्ते पर चलता पड़ता है जबकि लोग बिना श्रम के कामयाब होना चाहते हैं भले ही इसके लिए ईमानदारी का त्याग ही क्यों न करना पड़े।
4. घ) 5. क)
6. परसाई जी को व्यंग्यकार इसलिए माना जाता है कि उन्होंने सभी गद्य विधाओं में व्यंग्य लेखन ही किया है और व्यंग्य को स्वतंत्र विधा की तरह स्थापित किया है।
7. आत्मा को फोल्डिंग कुर्सी इसलिए कहा गया है क्योंकि लोग आत्मा को फोल्डिंग कुर्सी की तरह इस्तेमाल करते हैं। जब जरूरत होती है आत्मा को कुर्सी की तरह खोलकर उस पर बैठ जाते हैं और जब जरूरत नहीं होती तो कुर्सी की तरह आत्मा को भी समेटकर एक तरफ रख देते हैं।
8. सुरेश नामक परीक्षार्थी का अंग्रेजी का पेपर बिगड़ गया है। उसका रोल नंबर 2431 है। उसकी उत्तरपुस्तिका सिन्हा जी के पास जांच के लिए गई है और उसे 40 प्रतिशत अंक दिलवाने हैं ताकि वह पास हो जाए।
9. मुख्य मार्ग का अर्थ है, मेहनत और ईमानदारी का रास्ता।
10. स्नेही का अर्थ होता है, जिसे स्नेह किया जाए यानी प्यार किया जाए। लेकिन यहां परसाई जी ने स्नेही का व्यंग्य में प्रयोग किया है क्योंकि ऐसे लोग स्वार्थवश ही अपने स्नेही होने का दिखावा करते हैं।

vH;kl

1. दिए गए अंश की संदर्भ सहित व्याख्या पाठ और इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़कर स्वयं कीजिए।
2. दिए गए अंश की संदर्भ सहित व्याख्या पाठ और इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़कर स्वयं कीजिए।
3. इकाई के भाग 38.5 और 38.8 को ध्यानपूर्वक पढ़कर उत्तर दीजिए।
4. भाग 38.7 को पढ़कर अपने शब्दों में उत्तर लिखिए।
5. इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़कर उत्तर लिखें।